साइड का सवाल समाज का बवाल

▸ डॉ रामानुज पाठक सतना (म.प्र.)

हमारा देश बड़ा अद्भुत है। यहाँ संविधान की धाराएँ बाद में खुलती हैं, लेकिन डीजे का वॉल्यूम पहले खुल जाता है। रिश्ते बाद में बनते हैं, पहले 'साइड' बनती है। और यदि किसी ने गलती से कह दिया– 'भाई, ज़रा साइड दे दो...' तो यह वाक्य आजकल लोकतंत्र में विपक्ष के भाषण से भी अधिक खतरनाक हो गया है। कभी साइड माँगने पर लोग मुस्कुराकर रास्ता दे देते थे। अब साइड माँगते ही सामने वाला ऐसे तमतमा जाता है मानो उसकी पुश्तैनी जागीर पर कब्ज़ा माँग लिया गया हो। सड़कें सार्वजनिक कम और व्यक्तिगत अहंकार की प्रयोगशाला अधिक लगने लगी हैं।

अक्सर समाचार पढ़कर लगता है कि अब हत्या की वजहें भी आधुनिक हो गई हैं। पहले इतिहास में युद्ध राज्य विस्तार के लिए होते थे, अब मोहल्ले की लड़ाइयाँ डीजे के स्पीकर, बाइक की रफ्तार, हॉर्न और 'साइड' पर होने लगी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे समाज में इंसान का रक्तचाप ब्रेक ऑयल से नहीं, अहंकार से चलता है।

सबसे बड़ा कटाक्ष यह है कि जिस देश ने दुनिया को 'अहिंसा परमो धर्मः' का संदेश दिया, वहीं आज कुछ लोग 'अहंकार परमो धर्मः' का पालन कर रहे हैं। सड़क पर किसी ने हॉर्न बजा दिया तो लगता है जैसे उसने आत्मसम्मान पर हमला कर दिया हो। लोग रास्ता देने के बजाय अपनी मर्दानगी की परीक्षा देने लगते हैं।

विडंबना देखिए–बच्चों को स्कूल में 'कृपया ', 'धन्यवाद' और 'क्षमा कीजिए' पढ़ाया जाता है, लेकिन घर लौटते ही वे देखते हैं कि बड़े लोग 'देख लूंगा ', 'जानता नहीं मैं कौन हूँ' और 'बाहर निकल' जैसी नई नैतिक शिक्षा दे रहे हैं। फिर हम आश्चर्य करते हैं कि समाज में सहिष्णुता क्यों घट रही है। आजकल गुस्सा भी डिजिटल हो गया है। पाँच सेकंड में वीडियो वायरल, दस सेकंड में भीड़ इकट्ठी और तीस सेकंड में किसी की ज़िंदगी खत्म। सोचने का समय किसी के पास नहीं, लेकिन ट्रिगर दबाने का समय सबके पास है। धैर्य का स्टॉक खत्म हो चुका है और आवेश की फैक्ट्री चौबीस घंटे चल रही है।

क्षणिक आवेश में आकर पिद्दी से कारणों से हत्या तक कर देना केवल एक अपराध नहीं, बल्कि उस मानसिकता का आईना है जिसमें 'मैं' इतना विशाल हो गया है कि उसके सामने 'हम' दिखाई ही नहीं देता। सड़क पर गाड़ी की साइड नहीं, वास्तव में अहंकार की टक्कर होती है। गोली चलने से पहले शब्द मरते हैं, संवाद मरता है, विवेक मरता है। जब बातचीत समाप्त होती है, तभी बारूद बोलने लगता है।

हम ऐसे दौर में पहुँच गए हैं जहाँ वाहन में एयरबैग तो अनिवार्य हो रहे हैं, लेकिन दिमाग में 'संयम-बैग' लगाने की कोई व्यवस्था नहीं है। ड्राइविंग लाइसेंस तो मिल जाता है, पर क्रोध पर नियंत्रण का लाइसेंस कोई नहीं पूछता। यदि सड़क पर उतरने से पहले दो मिनट धैर्य की परीक्षा ली जाए, तो शायद दुर्घटनाएँ ही नहीं, अनेक अपराध भी कम हो जाएँ।

समाज का दुर्भाग्य यह है कि हम हथियार रखने को ताकत समझ बैठे हैं और स्वयं पर नियंत्रण रखने को कमजोरी। जबकि सच्चाई इसके ठीक उलट है। बंदूक का ट्रिगर दबाना आसान है, अपने क्रोध का ट्रिगर रोकना कठिन।

अब समय आ गया है कि सड़क पर केवल ट्रैफिक नियम ही नहीं, संवाद के नियम भी लागू हों। हर मोहल्ले में सीसीटीवी से पहले संस्कार चाहिए, हर वाहन में हॉर्न से पहले धैर्य चाहिए और हर नागरिक के भीतर यह समझ चाहिए कि रास्ता देने से कद छोटा नहीं होता, बल्कि चरित्र बड़ा होता है।

आजकल लोग रास्ता कम रोकते हैं, अपने भीतर का विवेक अधिक रोकते हैं। सड़क पर साइड देने से जो इन्कार करता है, वह अक्सर जीवन से भी समझौता कर बैठता है। ज़रा-सी जगह दे देने से कोई छोटा नहीं होता, लेकिन ज़रा-सा अहंकार कई घरों का चिराग बुझा देता है। यही हमारे समय का सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न है–देश चाँद पर पहुँच गया, लेकिन कुछ लोग अभी भी 'साइड' से आगे नहीं बढ़ पाए।

नकली लक्जरी सामान : सस्ते सौदे की असली कीमत

▸ ब्रजेश कानूनगो

वियतनाम अकेला नहीं है। हाल के वर्षों में अमेरिका, हांगकांग, थाईलैंड और कई अन्य देशों ने भी नकली लक्जरी वस्तुओं के विरुद्ध अभियान तेज किए हैं। यह इसलिए भी आवश्यक हो गया है क्योंकि नकली सामानों का कारोबार अब केवल कुछ फुटपाथी दुकानों तक सीमित नहीं रहा। यह संगठित अपराध, कर चोरी, मनी लॉन्ड्रिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी और बौद्धिक संपदा अधिकारों के उल्लंघन से जुड़ा बहु-अरब डॉलर का वैश्विक कारोबार बन चुका है।

हाल के महीनों में वियतनाम द्वारा नकली लक्जरी सामानों के विरुद्ध चलाया गया व्यापक अभियान केवल कानून-व्यवस्था की कार्रवाई नहीं है, बल्कि बदलते वैश्विक व्यापार की नई वास्तविकता का संकेत भी है। अमेरिका लंबे समय से आरोप लगाता रहा है कि वियतनाम नकली ब्रांडेड वस्तुओं, पायरेटेड सॉफ्टवेयर और चीनी उत्पादों के पुन:-निर्यात का प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है। अमेरिकी दबाव और ऊँचे आयात शुल्क की आशंकाओं के बीच वियतनाम सरकार ने बड़े पैमाने पर छापेमारी शुरू की। हो ची मिन्ह सिटी सहित अनेक स्थानों पर हजारों नकली उत्पाद जब्त किए गए और ऑनलाइन बिक्री नेटवर्क पर भी शिकंजा कसा गया।

आज किसी भी बड़े शहर के बाजार, पर्यटन स्थल या ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म पर 'फर्स्ट कॉपी', 'मिरर कॉपी' और 'एएए कॉपी' जैसे शब्द आम हो चुके हैं। महंगे ब्रांडों के जूते, बैग, घड़ियाँ, कपड़े, इत्र और चश्मे उनकी वास्तविक कीमत के छोटे से हिस्से में उपलब्ध मिल जाते हैं। दिलचस्प तथ्य यह है कि अधिकांश खरीदार जानते हैं कि वे नकली वस्तु खरीद रहे हैं, फिर भी उन्हें कोई अपराधबोध नहीं होता। उनके लिए यह कम कीमत में प्रतिष्ठा का अनुभव खरीदने जैसा सौदा है।

यही इस समस्या की सबसे बड़ी चुनौती है। नकली सामानों का बाजार केवल आर्थिक कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक मनोविज्ञान के कारण भी फल-फूल रहा है। लक्जरी ब्रांड आज उपयोगिता से अधिक सामाजिक पहचान का माध्यम बन चुके हैं। सोशल मीडिया ने इस प्रवृत्ति को और तीव्र किया है। तस्वीरों और वीडियो की दुनिया में वस्तु की गुणवत्ता से अधिक उसका लोगो दिखाई देता है। ऐसे में यदि कम कीमत पर वही बाहरी स्वरूप मिल जाए तो अनेक उपभोक्ता उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं करते।

नकली उत्पाद बनाने वालों के लिए भी यह अत्यंत लाभकारी कारोबार है। उन्हें न अनुसंधान पर खर्च करना पड़ता है, न डिज़ाइन, गुणवत्ता परीक्षण, विज्ञापन या ब्रांड निर्माण पर। वे केवल प्रसिद्ध ब्रांड की पहचान का अनुचित लाभ उठाकर कम लागत में भारी मुनाफा अर्जित करते हैं। यही कारण है कि यूरोप, अमेरिका, चीन, तुर्किये, दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत सहित अनेक देशों में यह समानांतर बाजार लगातार विस्तार कर रहा है।

भारत भी इससे अछूता नहीं है। दिल्ली के पालिका बाजार से लेकर मुंबई, कोलकाता, अहमदाबाद, सूरत और जयपुर जैसे शहरों तक नकली ब्रांडों का कारोबार वर्षों से चलता आ रहा है। अब डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने इसे और व्यापक बना दिया है। सोशल मीडिया और छोटे ई-कॉमर्स माध्यमों के जरिए नकली उत्पाद सीधे ग्राहकों तक पहुँच रहे हैं। कई बार उपभोक्ता स्वयं भी यह पहचान नहीं पाता कि उसने असली वस्तु खरीदी है या उसकी नकल।

इसका दूसरा पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। मूल ब्रांड बनाने वाली कंपनियाँ वर्षों तक अनुसंधान, डिज़ाइन, गुणवत्ता नियंत्रण और विपणन पर भारी निवेश करती हैं। नकली उत्पाद बिना किसी बौद्धिक या वित्तीय निवेश के उसी प्रतिष्ठा का लाभ उठा लेते हैं। इससे केवल उनकी बिक्री प्रभावित नहीं होती, बल्कि ब्रांड की विश्वसनीयता और विशिष्टता भी कमजोर पड़ती है। यदि कोई उपभोक्ता खराब गुणवत्ता वाले नकली उत्पाद को असली समझ ले, तो उसके मन में ब्रांड की छवि भी धूमिल हो सकती है।

दीर्घकाल में यह नवाचार और अनुसंधान पर निवेश के उत्साह को भी प्रभावित करता है। लेकिन इसका प्रभाव केवल कंपनियों तक सीमित नहीं रहता। नकली वस्तुओं के कारण सरकारों को कर राजस्व का नुकसान होता है, वैध उद्योगों में रोजगार प्रभावित होता है और संगठित अपराध को आर्थिक आधार मिलता है। इससे भी अधिक चिंताजनक तथ्य यह है कि दवाइयों, सौंदर्य प्रसाधनों, विद्युत उपकरणों और वाहन के पुर्जों जैसे क्षेत्रों में नकली उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकते हैं।

हालाँकि इस बहस का एक दूसरा पक्ष भी है, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। कई विशेषज्ञों का मानना है कि कुछ लक्जरी ब्रांड अपनी वास्तविक उत्पादन लागत की तुलना में अत्यधिक ऊँचे मूल्य वसूलते हैं। उपभोक्ता का बड़ा भुगतान उत्पाद की उपयोगिता के बजाय उसकी ब्रांड छवि और विशिष्टता के लिए होता है। परिणामस्वरूप अनेक लोग यह महसूस करते हैं कि वे केवल नाम के लिए अत्यधिक कीमत चुका रहे हैं। यह धारणा भी नकली उत्पादों की मांग को बढ़ाती है। इसलिए समस्या केवल अवैध कारोबार की नहीं, बल्कि अत्यधिक महंगी उपभोक्ता संस्कृति की भी है।

स्पष्ट है कि इस चुनौती का समाधान केवल छापेमारी या दंडात्मक कार्रवाई नहीं हो सकता। बौद्धिक संपदा कानूनों का प्रभावी पालन, सीमा शुल्क एजेंसियों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर नकली उत्पादों की त्वरित पहचान और हटाने की व्यवस्था तथा आधुनिक डिजिटल प्रमाणीकरण तकनीकों का व्यापक उपयोग आवश्यक होगा। क्यूआर कोड, ब्लॉकचेन आधारित सत्यापन और डिजिटल प्रमाणपत्र जैसी तकनीकें इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

इसके साथ ही ब्रांड कंपनियों को भी आत्ममंथन करना होगा। यदि वे बेहतर गुणवत्ता के साथ अपेक्षाकृत सुलभ मूल्य वाली उत्पाद श्रृंखलाएँ विकसित करें, तो नकली बाजार का आकर्षण स्वाभाविक रूप से घट सकता है। भारत जैसे देशों में स्थानीय गुणवत्ता आधारित ब्रांडों को प्रोत्साहन देकर उपभोक्ताओं को विश्वसनीय और किफायती विकल्प उपलब्ध कराना भी दीर्घकालिक समाधान का हिस्सा होना चाहिए।

दरअसल नकली लक्जरी वस्तुओं का कारोबार केवल सस्ती खरीदारी का प्रश्न नहीं है। यह उपभोक्ता मनोविज्ञान, सामाजिक प्रतिष्ठा, वैश्विक व्यापार, कानून, नवाचार और नैतिकता के जटिल अंतर्संबंधों का परिणाम है। जब तक कम कीमत में प्रतिष्ठा पाने की मानसिकता बनी रहेगी, तब तक नकली बाजार भी किसी न किसी रूप में जीवित रहेगा। इसलिए आवश्यक है कि सरकारें प्रभावी कानून लागू करें, कंपनियाँ मूल्य और उपलब्धता के बीच संतुलन स्थापित करें तथा उपभोक्ता भी मौलिकता और गुणवत्ता के महत्व को समझें। स्वस्थ और निष्पक्ष बाजार व्यवस्था की रक्षा का यही सबसे टिकाऊ मार्ग है।

हार्मुज़ पर टैक्स की जंग : किसका समुद्र, किसका अधिकार

▸ डॉ घनश्याम बादल

युद्ध केवल मोर्चों पर नहीं लड़े जाते, वे समुद्रों, व्यापार मार्गों, अर्थव्यवस्था और कूटनीति पर भी लड़े जाते हैं। आज फारस की खाड़ी का प्रवेश द्वार, हार्मुज़ जलडमरूमध्य, इसी प्रकार के संघर्ष का केंद्र बन गया है। ईरान और अमेरिका एक-दूसरे पर युद्धविराम की शर्तें तोड़ने का आरोप लगा रहे हैं। एक ओर ईरान अपने समुद्री क्षेत्र से गुजरने वाले जहाजों पर नियंत्रण और शुल्क लगाने की बात कर रहा है, तो दूसरी ओर अमेरिका भी समुद्री सुरक्षा के नाम पर जहाजों से 20 प्रतिशत शुल्क वसूलने की घोषणा कर चुका है। दोनों पक्ष अपने-अपने कदम को वैध ठहरा रहे हैं, किंतु प्रश्न यह है कि इसकी कीमत कौन चुकाएगा? उत्तर स्पष्ट है– दुनिया।

ताज़ा घटनाक्रम में दोनों देश युद्धविराम के उल्लंघन के लिए एक-दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं। अमेरिका का आरोप है कि ईरान ने हार्मुज़ में जहाजों की आवाजाही बाधित कर समझौते की भावना का उल्लंघन किया, जबकि ईरान का कहना है कि अमेरिकी सैन्य कार्रवाई, नाकेबंदी और इज़राइल को समर्थन ने युद्धविराम को अर्थहीन बना दिया।

स्वतंत्र रूप से इन दावों की पूरी पुष्टि संभव नहीं है, लेकिन इतना स्पष्ट है कि दोनों पक्ष युद्धविराम की अलग-अलग व्याख्या कर रहे हैं और यही टकराव का सबसे बड़ा कारण बन गया है।

इस पूरे संकट में इज़राइल की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। ईरान का आरोप है कि इज़राइल की सैन्य गतिविधियों को अमेरिकी समर्थन प्राप्त है, जबकि अमेरिका इसे क्षेत्रीय सुरक्षा का प्रश्न बताता है। परिणाम यह है कि युद्ध केवल ईरान और अमेरिका के बीच सीमित नहीं रह गया, बल्कि पूरा पश्चिम एशिया उसकी चपेट में आ गया है। हार्मुज़ जलडमरूमध्य विश्व ऊर्जा आपूर्ति की जीवनरेखा है। सामान्य परिस्थितियों में विश्व के समुद्री तेल व्यापार का लगभग पाँचवाँ हिस्सा इसी मार्ग से गुजरता है। यदि इस मार्ग पर कोई भी पक्ष कर लगाए, जहाजों को रोके या सैन्य नियंत्रण स्थापित करे, तो उसका प्रभाव केवल खाड़ी तक सीमित नहीं रहेगा। तेल की कीमतें बढ़ेंगी, समुद्री बीमा महँगा होगा, माल ढुलाई की लागत बढ़ेगी और अंततः पूरी दुनिया में महँगाई का दबाव बढ़ेगा।

सबसे रोचक और विडंबनापूर्ण स्थिति यह है कि दोनों पक्ष लगभग एक जैसी नीति अपना रहे हैं। ईरान कहता है कि वह अपनी समुद्री सीमा और सुरक्षा के लिए शुल्क लेगा। अमेरिका कहता है कि वह समुद्री सुरक्षा उपलब्ध करा रहा है, इसलिए उसके लिए भी शुल्क लिया जाना चाहिए। नाम अलग-अलग हो सकते हैं–'टैक्स', 'टोल', 'सुरक्षा शुल्क' या 'प्रतिपूर्ति'–लेकिन अंततः भुगतान जहाज मालिकों को करना होगा और उसका भार दुनिया के उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। यही इस पूरे विवाद की सबसे बड़ी विडंबना है।

अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानून का मूल सिद्धांत यह है कि अंतरराष्ट्रीय नौवहन मार्गों पर निर्बाध आवागमन सुनिश्चित किया जाए। किसी एक देश द्वारा समुद्री मार्ग को आर्थिक या राजनीतिक दबाव का साधन बनाना वैश्विक व्यापार व्यवस्था की भावना के विरुद्ध माना जाता है। यही कारण है कि दोनों पक्षों के दावों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रश्न उठ रहे हैं।

भारत के लिए यह संकट विशेष चिंता का विषय है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा भाग आयात करता है और उसका महत्वपूर्ण हिस्सा खाड़ी क्षेत्र से आता है। यदि हार्मुज़ में तनाव बढ़ता है तो कच्चे तेल की कीमतें बढ़ेंगी, पेट्रोल और डीज़ल महँगे होंगे, परिवहन लागत बढ़ेगी, उर्वरकों की कीमत प्रभावित होगी और अंततः महँगाई का दबाव आम नागरिक तक पहुँचेगा। इसके अतिरिक्त खाड़ी देशों में कार्यरत लाखों भारतीयों की सुरक्षा और भारतीय निर्यात-आयात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

खाड़ी देशों की स्थिति भी कम कठिन नहीं है। वे एक ओर अमेरिका के सुरक्षा सहयोगी हैं, दूसरी ओर उनकी अर्थव्यवस्था समुद्री व्यापार और ऊर्जा निर्यात पर निर्भर है। इसलिए वे किसी भी ऐसे संघर्ष से बचना चाहते हैं जिससे व्यापार बाधित हो। लंबे समय तक तनाव बना रहा तो खाड़ी देशों की आर्थिक वृद्धि और निवेश दोनों प्रभावित होंगे।

वास्तविकता यह है कि आधुनिक युद्धों में 'आर-पार की जीत' अब लगभग असंभव हो गई है। अमेरिका जैसी महाशक्ति भी ईरान जैसे क्षेत्रीय शक्ति-संपन्न देश को स्थायी रूप से झुका नहीं सकती, और ईरान भी अमेरिका को सैन्य रूप से पराजित करने की स्थिति में नहीं है। दोनों देशों के पास एक-दूसरे को क्षति पहुँचाने की क्षमता अवश्य है, लेकिन निर्णायक विजय की संभावना अत्यंत सीमित है। ऐसे में यह संघर्ष सैन्य से अधिक राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक बन जाता है।

दुर्भाग्य यह है कि दोनों पक्षों की सरकारें अपने-अपने राष्ट्रीय गौरव, राजनीतिक प्रतिष्ठा और रणनीतिक संदेश को पीछे हटने नहीं देना चाहतीं। परिणामस्वरूप समझौते की गुंजाइश लगातार संकुचित होती जा रही है। इतिहास बताता है कि जब राष्ट्रीय अहंकार संवाद पर हावी हो जाता है, तब युद्ध लंबे होते हैं और उनकी कीमत निर्दोष नागरिक तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था चुकाती है।

'पत्रकारिता के मूल्य और सामाजिक सरोकार ' विषय पर प्रो. शरद नारायण खरे का व्याख्यान

मंडला-वर्तमान में इंटरनेट की मदद से गूगल व स्ट्रीमयार्ड द्वारा एक से बढ़कर एक ओनलाइन प्रस्तुतियाँ व प्रसारण हो रहे हैं, जिनके द्वारा बौद्धिक चेतना का प्रसारण हो रहा है जो सुखद अहसास का विषय है।

इसी श्रंखला में संयोजक डॉ धीरेंद्र राँगड़ के संयोजन में 'भारतीय साहित्य संगम, उत्तराखंड' द्वारा 'शब्दों का कारवाँ-361' व्याख्यान माला अंतर्गत अनेक श्रेष्ठ कृतियों के सृजक,रेडियो व टीवी के अंतर्राष्ट्रीय चैनलों पर अनेक प्रस्तुतियाँ देने वाले,सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, विचारक, वक्ता, कवि, लेखक, इतिहासकार व शासकीय जगन्नाथ मुन्नालाल चौधरी महिला महाविद्यालय मंडला के प्राचार्य प्रो(डॉ) शरद नारायण खरे ने 'पत्रकारिता के मूल्य और सामाजिक सरोकार ' विषय पर गत रविवार को पत्रकारिता की राष्ट्रीय व सामाजिक चेतना,नैतिक जिम्मेदारी,जनवादी दृष्टिकोण,आम लोगों की प्रतिनिधित्वता व सांस्कृतिक सरोकारों के परिप्रेक्ष्य में व्याख्यान देते हुए पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास व आजादी की लड़ाई में उसके स्वर्णिम योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला,और उसकी प्रजातंत्र के चतुर्थ स्तंभ के रूप में भूमिका व दायित्वों का समुचित विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया।

पत्रकारिता के सामाजिक दायित्वों का खुलासा करते हुए बताया कि समाचार पत्र/चैनल की सतत प्रस्तुतियों के अनुसार ही उसका महत्व स्थापित होता है।उन्होंने पत्रकारिता को सदैव ही सकारात्मक रहने व वैचारिक दृष्टि से समृद्ध रहकर राष्ट्र के प्रति कर्तव्यपरायण रहने की बात कही।

हैलो यूट्यूब सम्मेलन का आयोजन किया गया

मंडला-सिद्धेश्वर जी के संयोजन - संचालन व अध्यक्षता ,मंडला मप्र के कवि-गायक प्रो शरद नारायण खरे के मुख्यातिथ्य व गायिका नीलम खरे जी के प्रभार में गत दिवस अवसरधर्मी सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया.

इस कार्यक्रम में सप्ताह भर तक गायकों, चित्रकारों व शौकिया फोटोग्राफरों ने अवसरधर्मी संस्था के पेज पर अपने उत्कृष्ट सृजन का प्रदर्शन किया। जिनको देख-सुनकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. शरद नारायण खरे ने समीक्षात्मक टिप्पणियाँ कीं,और कलाकारों को प्रोत्साहित किया।गायिका नीलम खरे जी ने प्रभारी का दायित्व समुचित तरीके से निभाया।

अंतिम दिवस समस्त गीतों, चित्रों व फोटोग्राफी का यूट्यूब पर लाइव प्रसारण किया गया, जिसमें सिद्धेश्वर जी ने सप्ताह भर की सक्रियता के आधार पर अपनी डायरी पढ़ी। मुख्य अतिथि प्रो.शरद नारायण खरे ने अपने उद्बोधन में संवेदना, भावप्रवणता व अभिव्यक्ति की छटपटाहट को कला की जन्मदाता बताया। उन्होंने मन के विचारों व अनुभूतियों को कला की आधारशिला निरूपित किया।

संयोजक की माँग पर मुख्य अतिथि प्रो.शरद नारायण खरे ने मुकेश जी का 'कटी पतंग' का बेहतरीन गाना 'जिस गली में तेरा घर न हो बालमा---' गाकर कार्यक्रम को सरस बना दिया। नीलम खरे जी ने आभार प्रदर्शन किया।

शिक्षा और साहित्य की दोहरी साधना के प्रेरक हस्ताक्षर : भारत भूषण पाठक 'देवांश'

दुमका (झारखंड)। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले भारत भूषण पाठक 'देवांश' आज एक शिक्षक, साहित्यकार और संवेदनशील चिंतक के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। इंटरनेशनल स्कूल ऑफ दुमका, सरैयाहाट (सर्वाधाम) में लगभग एक दशक से हिन्दी सहायक शिक्षक के रूप में कार्यरत 'देवांश' विद्यार्थियों में भाषा के साथ-साथ संस्कार और साहित्य के प्रति भी रुचि विकसित कर रहे हैं। 1 जुलाई 1985 को दुमका के धौनी (शुम्भेश्वरनाथ) में जन्मे भारत भूषण पाठक ने बी.कॉम. (लेखांकन प्रतिष्ठा) तथा डी.एल.एड. (एन.आई.ओ.एस.) की शिक्षा प्राप्त की है। उनकी साहित्यिक यात्रा दसवीं कक्षा से प्रारम्भ हुई, जो आज अनेक राष्ट्रीय मंचों और प्रतिष्ठित सम्मानों तक पहुँच चुकी है। उन्हें भारत भारती सम्मान, श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, साहित्य सहिष्णु सम्मान, समीक्षाधीश सम्मान तथा स्टोरी मिरर के 'ऑथर ऑफ द वीक' और 'ऑथर ऑफ द ईयर' जैसे सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। भारत भूषण पाठक 'देवांश' का मानना है कि साहित्य समाज को दिशा देने का सशक्त माध्यम है और श्रेष्ठ लेखन का आधार निरंतर अध्ययन है। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना, सामाजिक यथार्थ और हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण स्पष्ट दिखाई देता है। शिक्षा और साहित्य की इस दोहरी साधना के माध्यम से वे नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

▸ रिपोर्ट -कुमार संदीप